

स्पर्श
पाठ - I
पुष्पक का अधिकार
लेखक - यशपाल

प्रश्न/उत्तर

i) मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?

उत्तर i) उसकी पोशाक ही समाज में उसका दर्जा तय करती है।

ii) पोशाक ही मनुष्य के उन्नति के बंध दरवाजे खोल देती है।

iii) पोशाक व्यक्ति व्यक्तियों को समाज की विभिन्न श्रेणियों में बाँटती है।

2) पोशाक हमारे लिए कब बंधन और ऊँचक बन जाती है?

उत्तर जब हम अपने से कम हीसियत रखने वाले मनुष्य के साथ बात करते हैं तो हमारी पोशाक हम ऐसा नही करने देती। हम स्वयं को बड़ा मान बैठते हैं और सामने वाले को छोटा मानकर उसके साथ बैठने तथा बात करने में सकीय को अनुभव करते हैं।

3) लेखक इस स्त्री के रोने का कारण क्या नहीं जान पाया?

उत्तर लेखक उसके रोने का कारण जानने की इच्छा रखते हुए भी अपनी पेशाक के कारण नहीं जान पाया क्योंकि इसे उससे छु जानने के लिए उसके पास नीच बैठना पड़ता जो उसकी पेशाक से गरिमा के खिलाफ था।

4) पास पड़ोस के कुत्तों से पूछने पर लेखक को क्या बात पता चली?

उत्तर पास पड़ोस के कुत्तों से पूछने पर लेखक को पता चला कि कुबिया का एक जावन पुत्र था - भवाना वह तेईस साल का था। वह शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर सब्जियाँ उगाकर बेचा करता था। एक दिन पधले सुबह सवेर वह पके हुए खरबुज तोड़ रहा था कि उसके पैर पर एक साँप पर पड़ गया। साँप ने उसे इस लिया, जिससे उसकी मति हो गई। उसके मरने के बाद ही पार को गुजारा करने वाला कोई नहीं था। अथवा मरावरी में उसे आगे ले जाने के लिए खरबुज के लिए बाजार में बेचना पड़ा।

5) भगवान

उत्तर भगवान पर कृपा फुटपाथ वह निवा

6) लड्डू खरबु

उत्तर साम फितना किसी मिथजन है। कुछ दुर्लभ वस्तु अम दिन

7) बुद्धि पड

5) भगवाना अपने परिवार का निर्वह कैसे करता था?

उत्तर भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा जमीन पर दूरी तरकारियाँ लगा रखी दुगाया करता था वह बहुत ही उन्हे सब्जी मछली या फूटपाथ पर बैठ कर बेचा करता था इस प्रकार वह अपने कष्टमारी करने अपने परिवार का निर्वह करता था।

6) लड्डू की मृत्यु के बाद कैसे दिन बूढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर सामाजिक और आर्थिक रूप से मनुष्य चाहे कितना ही मिथुन ~~कितना~~ कितना भी परिवार में किसी की मृत्यु उसे शोक से भर देती है। प्रियजन की मृत्यु पर रोना हर व्यक्ति चाहता है। बूढ़िया के पति पुत्र की मृत्यु होने पर सब कुछ दान - दक्षिणा में चला गया। बिमार बहुत और मरुत से तड़पते बच्चे को वह नहीं देख सकी और खरबूजे बेचने चल पड़ी। यद्यपि अभी उसके जवान बेटे को मेरे इसरा दी दिन पा।

7) बूढ़िया के दुःख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संग्राम महिला की याद क्यों आई?

उत्तर समाज के सभी लोग को दुख मनाने का और समान अधिकार होता है। जब लेखक के घर के बाहर में एक संभ्रात महिला के बेटे की इसमय मृत्यु हुई थी तो वह महिला अठ्ठाई मास तक पलंग से नहीं उठे थी जबकि वह बूढ़ी के बेटे की मृत्यु के अगले ही दिन वह खरबूजे बेचने निकल पड़ी थी। धनी होने के कारण महिला के पास असीमित समय था और बुढ़िया के पास समय का अभाव था। दोनों का शोक मनाने का ढंग अलग था। शहर के सभी लोग उस संभ्रात महिला के पास शोक प्रकट करने आये। जबकि वही लोग बुढ़िया की तरह तरह के सने ताने सुना रहे थे। इन्हीं सब इन्हीं सब विचारों की वजह से लेखक ने जब उस वृद्ध महिला को अपने बेटे की मृत्यु के दुख में दुखी खरबूजे बेचते हुए देखकर तो लेखक को उस संभ्रात महिला की याद आ गई

वे बाजार के लोग खरबूजे बेचनेवाली स्त्री के घर में आ गया उठ रहे थी अपने शोक में लिपिर।

प.प.०

उत्तर बाजार के लोग खरबुने बेचनेवाली स्त्री के बारे में तरह-तरह की बातें कहते हुए उसे तन दे रहे थे। वह लोग उसके जीवन के क सौंप आका का लिए जानि के बाद मर कर जानि पर भी बुढ़िया द्वारा बाजार के आ कर खरबुना बेचने की प्रतीति से उसे वार में बदला-बुरा कह रहे थे व उसका बाजार में आकर खरबुने बेचने की पापतुल्य क्युं मानकर उसे स्वयं बचने की दानी के रूप में बच रहे थे।

9) लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?

उत्तर लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया जी कुछ कर सकती थी। वह उसने वह सभी उपाय किए। वह पण्डित से भी गई। झाड़-फूँक करवाने के लिए आँखा को बूलासा लोई, सौंप के को विष निकल जाए व उसके के लिए नागदेवता की पूजा भी की, घर में मिलने अनोखे आ वह पान-पकिया पकिया में व आँखा को दे दिया परन्तु प्रयोग से लड़के को बड़ी बचा पड़ी। माँ बड़े और बच्चे भगवान से लिपटलिपट के रोए पर भगवान ने एक लोके रूप हुआ तो फिर न बोला। मर के विष में आ-उसका बदन काला पड़ गया।

10) लड़के ने बुढ़िया के दुख को अपना क्या लगाया?

आता लेखक ने बुढ़िया के दुख के का अंशला
अपने पत्र में पुत्र पुत्र के मृत्यु से
दुखी एक सभ्य महिला की बात को
सोफर लगाया।

1) इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' उद्यं तक साधक है - स्पष्ट नहीं।

आता इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' सटीक रूप से साधक है। लेखक यह कहना चाहता है कि यद्यपि दुख प्रकट करना हर व्यक्ति का अधिकार है परंतु हर कोई ऐसा नहीं कर सकता। एक और सम्पन्न महिला है और इस पर कोई जिम्मेदारी नहीं है उसके पुत्र पुत्र शोक प्रकट करने के लिए। आन्तर है सेवा करती है, साधक है, धन है, समर्थ है परन्तु गरीब लोग अयोग्य हैं, वह यदि तो बड़ी शोक प्रकट करने के लिए इशारा से पा आसु भी नहीं बहा सकता। उनके समर्थ बंधु, गरीबी, बीमारी नंगा नाच करने लकती अथवा गरीबी का दुख प्रकट करने का अधिकार नहीं है।

नारायण

स्पर्श पद्य - पाठ 1 रैदास

क्र) पहले पद में भगवान और भक्त को लिन-लिन चीलों से तुलना की गई है, उनका उल्लेख कीजिए।

अर पहले पद में भक्त ने ईश्वर के प्रति अपने भक्ति भाव को व्यक्त करने के लिए ईश्वर के विजय के बीच तुलना की है। रैदास के पहले पद भगवान और भक्त की चंदन - पानी, धन बन - मोर, दीपक - बाली, मुक्ती मोती - व्यागा, सोना - सुहागा आदि से तुलना तुलना की गई है। भक्त भगवान के माध्यम से परमेश्वर के नाम की लगन में रंग बना चाहता है और इसलिए वह किसी प्रकार धुंधला रूप में भगवान से जुड़ना चाहता है।

ख) पहले पद के प्रत्येक पंक्ति के अंत में तुल्य तुल्य शब्दों के प्रयोग से नाद मौद्रिक आ गया है जैसे - पानी, समानी आदि। इस पद में अन्य तुल्य शब्द लिखित-

अर पद्य के अन्य तुल्य शब्द हैं - पानी - समानी, मोर - चमोरा, बाली - राली, व्यागा - सुहागा, दासा - रैदासा।

ग) पहले पद में उल्लेख शब्द अर्थ की दृष्टि से परस्पर संबद्ध है। ऐसे शब्द

3 छाँटकर लिखिए-

अंतर दीपक - बाली
चंदन - पानी
चन्द - चमड़ा
मोति - व्याघ्र
दिन - रात
स्वामी - मणिक

प्रश्न) दूसरे पद में कवि ने 'गरीब निवाले' किसे कहा है? स्पष्ट कीजिए।

अंतर कवि ने दूसरे पद में गरीब निवाले ईश्वर (अगवान) से कहा है। ईश्वर की कृपा से इंसान को भोजन की पूर्ति हो जाती है। इतना ही नहीं नीच से नीच व्यक्ति पर भी अगर ईश्वर की कृपा हो जाए, तो उसका भी उद्धार हो जाता है। संसार में जिन लोगों को दुःख/दुखत या असुखता की वृष्टि हो देखा जाता है प्रभु ईश्वर भी इतना दयालु है। दुखिया पर दया करने वाले प्रभु नीच से भी ऊँची पक्की पहान करा दे। इसलिए प्रभु ने पतित, पावन, भक्त, कर्मल, योगिनय कह जाता है।

प्रश्न) दूसरे पद की 'लाली' कौन सी लालत कहेंगे? लाली का पर कौन है? इस पंक्ति का आशय

अपने जीवन।

30 जाकि ज्योति लागत कड लागता पर उचे वर
 को आशुस न यह की कि इस्वा गरि
 निवाजु है निन्दे ~~अस्वर्ण~~ अस्वर्ण, अस्वर्ण मानत्र
 यह सस्यार उकरता है उन्दे वह अपनी
 शरण में लेकर उनका कल्याण करता है।
 उनका दुख को दुखत्र दिति होता है।
 उनका हस्य दुख से पर चला है।

करो रिदास ने अपने स्वामी को किन-किन नामों से
 पुकारा है?

30 कवि ने अपने स्वामी को कई नामों से
 पुकारा है वह ~~इस्वर~~ से गरिब, निवाजु, लालु,
 गोविंद, आदि नामों से संबोधित करता है।
 प्रभु का नाम भले ही अनेक हो लेकिन
 गरिबी का उद्धार करने वाले इस्वर पुरुष हैं जो
 बिना किसी भेदभाव के अपने सबसे गरीबों
 पर समान रूप से दया बरसाता है। नै सदा
 पूर अपना प्रेम लुपता है। कवि ने इस्वर
 को प्रति अपने धर्मभाव को प्रकट करने के
 लिए इस से कई अलग-अलग नामों
 से पुकार रहा है।

अनुस्वार व अनुनासिक

अनुस्वार (ं) - एक अनुस्वार एक व्यंजन ध्वनि है जो स्वर के रूप में वाद आती है। इसके उच्चारण से वायु नाक से अधिक व मुख से कम निकलती है। इसका प्रयोग - कु, कू, चकू, टकू, तकू, पकू के पाचने का ~~स्वर~~ स्वर रहित रूप 'ङ', 'अ', 'इ', 'ए' के स्थान पर होता है।

तीन स्थितियाँ स्पष्ट हैं -

- 1) अनुस्वार के रूप में
- 2) नासिक्य व्यंजन के स्थान पर
- 3) अनुनासिक के स्थान पर

उदाहरण - पतंग, अंश, गंगा, भंड

अनुनासिक ँ

अनुनासिक ध्वनि जो ँ के रूप में लिखा जाता है। यह ध्वनि ध्वनि न तो व स्वर है न ही व्यंजन, यह स्वरों के गुण है। जब कोई ध्वनि नाक व मुख दोनों से निकलती है तो इसमें विशेष प्रकार का नाक आ जाता है।

उदाहरण - साँप, चाँद, आँगन, जूँट

व्यंजना स्वररूपा से लिखिए।

अनुच्छेद लेखन

1) संघर्ष ही जीवन है

जीवन एक संघर्ष है। वं मुसीबतों व चुनौतियों
 भरा हुआ है। यह हमें सिखाता है कि कैसे
 विपरीत परिस्थितियों को सामना
 करना चाहिए तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने
 के लिये जो कष्ट करना पड़े उसे सहन करना चाहिए।
 संघर्ष हमें मजबूत बनाता है और हमें
 अपनी कमजोरियों को जानने का और उन्हें
 पार करने का अवसर देता है। वे बार
 संघर्ष हमें अकेला न मध्यम कर सकता है,
 लेकिन हम एक दूसरे का समर्थन करना
 चाहिए। हर संघर्ष हमें एक नया अवसर सिखाता
 है। हमें संघर्ष को सकारात्मक दृष्टिकोण से
 देखना चाहिए।
 जीवन के संघर्षों से घबराने नहीं
 बल्कि उनका सामना करें। यह संघर्ष ही
 आपको एक मजबूत, समझदार और सफल
 व्यक्ति बनाएगा।

संचयन

पाठ - 1

गिल्लू

विद्या - कदानी

लेखिका - महादेवी वर्मा

प्र) साँनलुही में लगी पीली कुत्ली को
दृष्ट लेखिका के मन में कौन से
विचार उभरने लगे?

उत्तर छायावादी के दौर के अग्रगण्य
रचनाकारों में महादेवी का अपना एक
अलग स्थान है। महादेवी की लेखनी
में पठकों को प्रभाव-विभोर कर देने
की क्षमता रही है। लेखिका के द्वारा
उस प्रसृत प्रकार उनकी प्रसिद्ध कदानी
गिल्लू से लिया गया है गिल्लू एक
गिलहरी है। कुछ समय अनेक पौंस
रहने के बाद गिल्लू की प्रकृति ही
जाती है। प्रस्तुत पंक्तियों में लेखिका
साँनलुही की पीली कुत्ली को देखकर
शुद्ध गिलहरी की सुन्दरी पाद में
रही वह जाती है। जैसे ज. उकी
काफी निकलती रहती थी एक तरफ से
खाए जाने की उस गिलहरी को
महादेवी जी ने अपने घर के एक
सदस्य की तरह पाला था।

प्र) पाठ के आधार पर कौन कौन
एक साथ समादरित और अनादरित

पाणी क्यों उड़ा गया है?

उत्तर: क्योंकि समादरित और अनादरित पाणी इसलिए उड़ा गया है क्योंकि यह एक विविध पाणी है। कभी कभी इसका आदर किया जाता है तो कभी इसका निरादर किया जाता है। श्राद्ध के पक्ष में लोग चाहे जो आदर सहित बोलाते हैं पितृ पक्ष में हमसे कुछ कुछ पाने के लिए हमारे पुत्रों को पुत्रों के कोड़ा बगकर ही पकट दोगा पड़ता है इसी मान्यता है यह अतिथी के आने का संदेश भी देता है। इस बातों के कारण यह समादरित है लेकिन यही हमें कोड़ा जब अपनी कंकुश आवाज में कोड़ा - कोड़ा करता है एव गान्धगी बसा है तो यही अनादरित हो जाती है।

3) मिर्च गिल्लू गुण के पाठ में गिलहरी के प्याथल बच्चे का उपचार किस प्रकार किया गया?

उत्तर: मिर्च गिल्लू गिलहरी के प्याथल बच्चे को उठाकर अपनी अपनी कमरे में लिए गई। सड़ से उसका खून पोंछकर उसके प्याथल पुर पैन्सिलिंग का मरहम लगाया। उसके मुँह में दूध डालने की कोशिश की। खुरंठ दूध मुँह तक नहीं पोंच पाया। सड़ पाटी के अचार के बाद वह उसके मुँह में कुछ पानी की एक कूँद भरकरने

मे सफल हुई। तीन दिन वह स्वस्थ
हो गया।

मे लिखिका का ध्यान आकर्षित करने के
लिए गिल्लू सा करता था।

आर लिखिका ने बुझपनी सेवा भाव से
पूर्ण रूप से गिल्लू को स्वस्थ कर
दिया। जान पर वह उस पुलकित
कर अपना सरनेट उकशित करने
लगा। वह वह इस दृष्टि की कभी
मे लगे प्रकाश पर पर से
बढ़ जाता। और फिर तुरंत उसी गति
सा वापस नीचे उतर जाता था।
वास्तव में वह लिखिका का ध्यान
अपनी आर आकर्षित करने के लिए इस
करता था। गिल्लू ऐसा तब तक
करता था जब तक कि लिखिका
उसे पकड़ने के लिए घुंटी पीड़ित
करने का। उसे यह है इसके अन्दर
इससे और धूम जवा क भाति है
लिखिका ने स लगाए हुए गया था।
एक-पक्षियों और जानवरों का मानव
के साथ सामाजिक संबंध बन जाता
है। ऐसा ही कुछ संबंध गिल्लू के
लिखिका के साथ बन गया था।

र-य

4

2/2

95

महामा

रन

धुर

4

2/11

2) 4/7

24/7

10

24

10/11/2019

11	1	5
----	---	---

11/11/21

100

19

$$\frac{1}{2}$$

21

उत्तर एक बार लेखिका बीमार बीगई तो
गिल्लू ने उनकी पूछ पूछ सेना के
वह उनकी पास आकर लिखने के
सिद्धान्त से बोक के नन्द - नन्द नन्द
पंजी से उठते हुए और वाला
से इतने डाल-डाल सहलाता रहता
की उसका वह से हलना पलकिया
से किसी परिचारिका के हलने के
समान लगता है इस प्रकार लेखिका की
अवस्था में गिल्लू ने परिचारिका
की भूमिका निभाई।

8. प्रभाव
वह
सा

उत्तर इस
सुख
श्री
लिखी
अन
विशव

9) गिल्लू के किन चपड़ाओं से यह
आभास मिलने लगा था कि अब अंत कम
जमीन है।

9. सोन
सम
विशव

उत्तर सामान्यतः गिलहरी का जीवन काल
दो वर्षों का माना जाता है। जब
गिल्लू की जीवन यात्रा का अंत आया
तो उसने दिन भर कुछ भी नहीं
खाया और वह बाहर भी खड़ा नहीं
रहा गया वह अपने पेट से
नीचे उतरा और लेखिका के बिस्तर
पर आकर उसकी गडगली पकड़ कर चिपक
गया। इन सभी चपड़ाओं से लेखिका को
लगा कि गिल्लू का अंत समीप है और
सबसे की पहली दिशा के साथ ही वह
हमेशा के लिए सो गया।

उत्तर: से
की
गिल्लू
म
गिल
अव
उर
वप
त

8. "प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागृत हो लिए सो गया" का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस अर्थ में आशय है कि प्रातः सन्तान सूर्य की किरण के साथ ही गिल्लू ने भी इस दुनिया का अन्तर्विधान उद्घोषित किया कि इसी अन्तः जीवन में जन्म लेने के लिए उसे अपने प्राण त्याग दिए लेखिका से यह विश्वास है।

9. सौगन्दी की लता के नीचे बनी गिल्लू की समाधि को लेखिका के मन में किसी तरह विश्वास का जन्म होता है।

उत्तर: सौगन्दी सौगन्दी की लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनाई गई क्योंकि यह लता गिल्लू का पसंद का पौधा था। लेखिका के मन में इस बात का विश्वास था कि एक दिन गिल्लू लता के छाँटे से पत्तों के रूप में अवशेष बन कर खिलेगा और वह फिर से उसे अपने आस-पास अनुभव कर पायेगा। यह विश्वास उसे संतुष्ट करता है।